श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
जनवरी २००९ केवल निजी परिचालन के लिए खंड २ अंक १

प्रिय भाईयों और बहनों,

नव वर्ष की शुभ कामनांए। वर्ष २००९ के एकोज़ इंडिया न्यूज़लेटर के प्रथम संस्करण में आपका हार्दिक स्वागत है।

नव वर्ष में मालिक ने हमें वर्ष २००९ तथा आगे के लिये संकल्प करने के लिये कहा है। मालिक द्वारा दी गई संदेश का निष्कर्ष इस अंक में प्रस्तुत है। मालिक की तिरुप्पूर, मलमपुज़ा, त्रिशूर, कोलकाता और खड़गपुर की यात्रा इस अंक की मुख्य झलकियाँ हैं।

मालिक ने अभ्यासियों को प्रेम, क्षमा, सहनशीलता और समझ इत्यादि नैतिक मूल्यों को स्वयं में विकसित करने का संदेश दिया। जिसके उपरांत कई केन्द्रों में इन मूल्यों पर चर्चा करने तथा अपने जीवन में इन मूल्यों को अंतर्निहित करने के लिये कार्यक्रम आयोजित किये गये।

अभ्यासियों के लिये आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम, सभाएं और नये प्रकाशनों की झलकियां इस अंक में प्रस्तुत हैं। प्रकाश के केन्द्र भाग में तिरुपति आश्रम जो कि मिशन का प्रथम आश्रम है, के बारे में बतलाया गया है।

मार्च २००९ संस्करण के लिये संस्मरण भेजने की अंतिम तिथि १५ फ़रवरी, २००९ है। कृपया अपने संस्मरण घटना की तस्वीरों के साथ अपने ज़ोनल प्रभारी के माध्यम से भेजें।

एकोज़ इंडिया न्यूज़लेटर टीम

नए वर्ष के लिये गुरुदेव का संदेश

2009

(गुरुदेव द्वारा ३१ दिसम्बर २००८ को दिये गये संदेश के कुछ अंश)

सहज मार्ग के अभ्यासी होने के नाते, हमें इस सत्य के प्रति सचेत रहना चाहिये कि मानव जीवन का एक ही लक्ष्य है और वह लक्ष्य है प्रथम मुक्ति, दूसरा आत्म–साक्षात्कार और तीसरा व अंतिम है मालिक में लीन हो जाना।

बाबूजी महाराज ने कहा है कि आज की दुनिया में सहज मार्ग, मुक्ति के ध्येय को पाने का सबसे तेज़ और आसान रास्ता है। लेकिन साथ ही उन्होंने इस बात पर भी ज़ोर दिया है कि आत्म–साक्षात्कार और मालिक में विलय हो जाने के ध्येय को पाना भी मुश्किल नहीं है बशर्ते हम इस जीवन में इसे पाने के लिये अपने मन को पक्का कर लें, जोकि मानव जीवन का और मानव विकास का भी ध्येय है।

धर्म, संस्कृति, शिक्षा, समाज और हमारे द्वारा रचे गये सभी भेद–भावों को अपने मन से निकाल देना चाहिये और भूल जाना चाहिये। और याद रखना चाहिये कि मानव जीवन में जो हमें जोड़ती है वह है आत्मा जो हमारे अंदर है, जो हमेशा से वैसी है जैसे किसी और की आत्मा। संस्कारों के कारण काया गल्ती करती है। मन पहले से सोचे विचारों और पक्षपात के कारण गल्ती करता है। आत्मा कभी गल्ती नहीं करती।

मैं इसलिये आप सब से विनती करता हूँ कि एक संकल्प करें: हे मालिक, मुझे स्वयं को क्षमा करने और इसलिये मेरे माध्यम से दूसरों को, जिनके लिये मैं सोचता हूँ या कल्पना करता हूँ कि उन्होंने जो भी मेरे लिये या मेरे विरुद्ध किया है क्षमा करने में मेरी सहायता करें, यह जानते हुए कि अंततः यह दिव्य मालिक ही हैं जो पृथ्वी पर हमारे इस मानव अस्तित्व रूपी दिव्य नाटक का मार्ग–दर्शन कर रहे हैं।

बैंगलूर

मालिक ३१ अक्तूबर को दुबई से बैंगलूर पहुँचे। अभ्यासियों के एक छोटे से समूह ने उन्का स्वागत किया और फ़िर वे 'शुभ एनक्लेव' में अपने निवास पर चले गये।

रविवार २ नवम्बर को, मालिक ने बैंगलूर में तीसरे आश्रम का उद्घाटन किया और उसका नाम 'परम धाम' रखा। यह एक लाल ईंटों से बनाई गई एक खूबसूरत इमारत है जिसमें भूतल पर ध्यान–कक्ष, रसोई घर, पुस्तकालय और ऑफ़िस है। बाकी दो मंज़िलों पर आवासियों के लिये ३२ कमरे, मेहमानों के लिये २ कमरे और २ डॉरमिट्रीज़ बनाई गई हैं।

सत्संग के पश्चात, मालिक ने कहा, परम धाम का अर्थ है– एक आवास जहाँ कोई जाता है फ़िर इस जीवन में कभी वापस न आने के लिये। मालिक १२ की सुबह को चेन्नई के लिये रवाना हो गये तथा रास्ते में नाट्मपल्ली आश्रम में कुछ देर रुके॥

तिरुप्पूर

मालिक ३ दिसम्बर बुधवार को तिरुप्पूर पहुँचे और सीधे डायमंड जूबली पार्क चले गये। वह काफ़ी प्रसन्नचित दिखाई दे रहे थे। वहाँ उन्होंने कुछ देर अभ्यासियों से बातचीत की। मालिक अपनी यात्रा के दौरान प्रसन्न रहे और उनसे मिलने के लिये लगातार अभ्यासी वहाँ आते रहे चूँकि मालिक की वहाँ पर एक सप्ताह से अधिक रहने की उम्मीद थी।

५ दिसम्बर शुक्रवार को सुबह साढ़े छः बजे मालिक ने नव निर्मित रसोईघर का उद्घाटन किया। इसे २००० वर्गफ़ुट में, मणप्पाकम आश्रम की तर्ज़ पर बनाया गया है। मालिक ने कहा कि जो अनपेक्षित समय पर आते हैं उनको 'अतिथि' कहते हैं। उनसे सम्मानजनक व्यवहार किया जाना चाहिये। केवल 'अन्न दान' ही ऐसा दान है जो ग्रहण करने वाले को संतुष्टि प्रदान करता है। जो खाना परोसते हैं उन्हें अभिग्राही को सम्मानपूर्वक खाना परोसना चाहिये। उन्हें सही ढंग से आमंत्रित किया जाना चाहिये और हमें आमंत्रित व्यक्ति का व्यक्तिगत रूप से ध्यान रखना चाहिये, बजाये इसके कि मेज़ पर खाना परोस दिया जाये और सब को आकर खाने के लिये आमंत्रित कर दिया जाये।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
जनवरी २००९ केवल निजी परिचालन के लिए खंड २ अंक १

रविवार को सत्संग के पश्चात मालिक ने ध्यान के दौरान बजने वाले सैल फ़ोनों के बारे में कड़ी घोषणा की। उन्होंने कहा, "अगर अभ्यासियों में इतनी भी गंभीरता नहीं है तो आश्रम आने का क्या मतलब? जो अपने मोबाइल फ़ोन के साथ व्यस्त हैं, उन्हें यहाँ आने के बजाये अपने घर पर ही रह कर कॉल करना चाहिये।"

मालिक बुधवार १० दिसम्बर को उदुमलपेट गाँव गये। उदुमलपेट के निकट अभ्यासियों ने ५ एकड़ ज़मीन दान की है। अभ्यासियों ने मालिक का अति उत्साह–पूर्वक अभिनंदन किया। मालिक काफ़ी देर तक अभ्यासियों से बातचीत करते रहे।

१७ दिसम्बर को मालिक पालक्काड़, मलम्पुज़ा और त्रिशूर गये। २० दिसम्बर को वे कोयंबतूर से चेन्नई रवाना हो गये।

मलमपुज़ा

१७ से २० दिसम्बर, २००८ तक मालिक केरल के मलम्पुज़ा में स्थित एस एम एस एफ़ विश्रांति केंद्र में रहे। यह मालिक की इस केन्द्र पर चौथी यात्रा थी तथा पहली बार मालिक विश्रांति केंद्र में ही ठहरे। इस दौरान मलमपुज़ा विश्रांति केंद्र में एक स्कॉलरशिप ट्रेनिंग प्रोग्राम का आयोजन किया गया था जिसमें विश्व भर से लगभग ४० छात्र और समन्वयक उपस्थित थे।

त्रिशूर

मालिक ने १९ दिसम्बर,२००८ को केरल के त्रिशूर कस्बे में पुज़ाक्कल में स्थित 'योगाश्रम' नामक ध्यान–कक्ष का उद्घाटन किया। यह आश्रम त्रिशूर कस्बे से लगभग ५ कि. मी. दूर त्रिशूर–कुन्नंकुळम मार्ग पर स्थित है। मालिक ने वहाँ सत्संग कराया और फ़िर एक भाषण दीया जिसमें उन्होंने दिल की सलाह को मानने की आवश्यकता पर बल दिया ताकि दिव्य उपस्थिति सही मायनों में इस हृदय में दिव्य उपस्थिति बन जाये चूंकि वो ही हमारे कल्याण का एकमात्र सच्चा मार्गदर्शक है। ४० विदेशी अभ्यासियों सहित लगभग १००० अभ्यासी इस कार्य में सम्मिलित हुए। सत्संग के पश्चात, मालिक ने अपने निवास पर, जिसका प्रबन्ध विशिष्ट तौर पर उनके लिये किया गया था, अभ्यासियों के साथ कुछ समय बिताया। दोपहर के भोजन के पश्चात ढाई बजे मालिक मलम्पुज़ा, पालक्काड़ के लिये रवाना हो गये।

कोयंबतूर और चेन्नई के लिये प्रस्थान करने के एक दिन पूर्व मालिक ने नये पुस्तकालय में छात्रों के समूह को संबोधित किया। उन्होंने कहा, "यदि लोग आध्यात्मिक जीवन में, दुनिया को बदलने के उद्देश्य से आ रहे हैं तो वे कुछ भी हासिल नहीं कर पायेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, यदि आप स्वयं को बदलने के लिये आते हैं, तो सफ़लता निश्चित है, बशर्ते आप स्वयं को बदलने के लिये स्वयं का प्रयोग करें"।

कोलकाता

मालिक २५ दिसम्बर को कोलकाता पहुँचे। लगभग ३५ अभ्यासी विमान में उनके साथ थे। २६ की दोपहर को मालिक अपनी कॉटेज के बाहर लॉन में बैठे। कोलकाता आश्रम के अद्भुत वातावरण का आनंद लेते हुये उन्होंने कहा:"हमारा हरेक आश्रम शांति का शाद्वल है"। एक प्रश्न उठा कि हम इस प्रकार की दुनिया बाहर क्यों नहीं बना पाते? इसका उत्तर देते हुए मालिक ने कहा,"यह पैसे का लालच है जिसने खुशी, संतोष और अच्छी सेहत हम से छीन ली है जिसका किसी ज़माने में हम आनंद लिया करते थे"।

२९ को मालिक ने खड़गपुर में CREST की नींव रखी जोकि भारत में बैंगलूर के बाद दूसरा ऐसा परिसर है। जब मालिक पाँच एकड़ के परिसर में भ्रमण कर रहे थे तो उन्होंने अभ्यासियों के समूह को उनके पीछे आने से मना करते हुए हास्य के साथ कहा,"मेरा आध्यात्मिक अनुसरण करें, न कि अन्यथा"।

मालिक ने सत्संग के पश्चात एक भाषण दिया जिसमें उत्तरदायित्व के विषय में उन्होंने कहा,"हमारा स्वयं (दिल) के प्रति उत्तरदायित्व, इस पृथ्वी पर किसी भी और उत्तरदायित्व से कहीं अधिक है। दोपहर के भोजन के बाद मालिक कोलकाता के लिये रवाना हो गये। वहाँ से अगले दिन लगभग ४० अभ्यासियों के साथ विमान द्वारा चेन्नई के लिये रवाना हो गये।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
जनवरी २००९ केवल निजी परिचालन के लिए खंड २ अंक १

सतकोल आवेदन २००९ के लिये

वर्ष २००९ के लिये ऑनलाईन आवेदन अब http://www.srcm.info/satkol/satkol_home.htm पर उपलब्ध है।

वसन्त कालीन बैच – जनवरी से मार्च (बैच २४९ से २५९) ऑनलाईन आवेदन प्रक्रिया अभी खुली है।

ग्रीष्म कालीन बैच – अप्रैल से जून (बैच २६० से २७१) ऑनलाईन आवेदन प्रक्रिया जनवरी १०, २००९ से शुरु होगी।

शीत कालीन बैच – सितम्बर से दिसम्बर (बैच २७२ से २८१) ऑनलाईन प्रक्रिया १० जून २००९ से शुरु होगी।

कृपया आवेदन पत्र भरने से पहले निर्देशों को ठीक से पढ़ लें। जिन के पास इन्टेरनेट सुविधा उपलब्ध नही है वे अपने प्रशिक्षक, केन्द्र प्रभारी या अंचल प्रभारी की मदद लें। प्रश्नों के उत्तर के लिये सतकोल प्रशासन कार्यालय से टेलीफ़ोन द्वारा ०४४ २२५२ १०९९ या ०४४ ४२१७ ११११; ext.२१८ पर प्रात: १० से १२ या दोपहर ३ से ४.३० के बीच सम्पर्क करें।

नये प्रकाशन

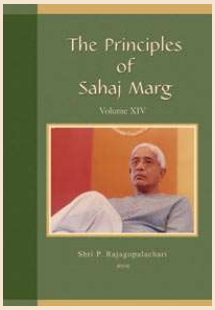

गुरुदेव ने १ जनवरी २००९ को 'सहज मार्ग के सिद्धान्त, भाग १४' का विमोचन किया। यह भाग वर्ष १९९१ मे गुरुदेव द्वारा दी गयी करीब पच्चीस भाषणों का संग्रह है।

३२० पन्नों कि इस पुस्तक मे लक्ष्य, स्वयंसेवक कार्य, पीड़ा का व्यतिक्रमण, नेतृत्व एवं गुरुदेव, जैसे व्यापक विषयों पर भाषण सम्मिलित है।

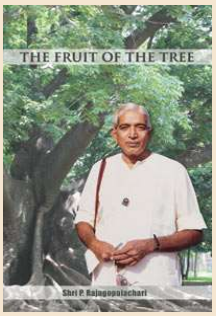

'वृक्ष का फल' का दूसरा संस्करण सबसे पहले १९८७ मे प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक मे हमारे गुरुदेव श्री पार्थसारथी राजगोपालाचारी द्वारा दिए गए भाषणों का संग्रह और प्रश्नोत्तर हैं। यह भाषण इटली, अमरीका और जर्मनी के दौरों मे सितम्बर से अक्टूबर १९८६ के बीच के समय मे दिए गए थें।

'दिल की आवाज २००६' के मराठी अनुवाद में गुरुदेव के भाषणों का संपूर्ण संग्रह है जो उन्होंने जनवरी से दिसम्बर २००६ के बीच अपनी भारत और विदेश कि यात्रा के दौरान विभिन्न स्थानो पर दिए। इसमे वे संदेश हैं जो गुरुदेव ने तिरुपुर, बेंगलूरु, चेन्नई, अहमदाबाद, कानपुर, हैदराबाद, पुणे, रायपुर, रोम, डेनमार्क, जर्मनी, प्राग, दुबई, सिंगापुर और मलेशिया में दिए थे।

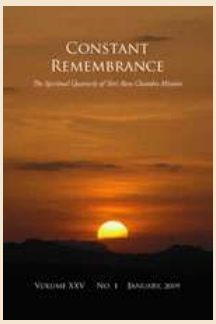

'सतत स्मरण' का जनवरी अंक शीघ्र ही वितरित किया जायेगा। अप्रैल २००९ अंक का विषय कृतज्ञता है। इस विषय पर आपके लेख या सहज मार्ग अभ्यास पर आपकी अन्तर्दृष्टि आमंत्रित है। कृपया अपने लेख cr@srcm.org पर १ फ़रवरी २००९ की अन्तिम तिथी से पहले भेज दे।

मणप्पाक्कम आश्रम मे बाढ़

बंगाल की खाड़ी मे उमड़ते तुफ़ान के कारण २६ नवम्बर को बरसात शुरु हो गयी। शाम तक मुसलाधार बारिश होने लगी। सावधानी के तौर पर सब आश्रम वासियों को आश्रम मे सुरक्षित स्थानो पर पहुँचा दिया गया और कई सामान को सुरक्षा के लिये ऊँचे स्थान पर पहुँचा दिया गया।

२७ की शाम तक आश्रम को, निवासियों से खाली करा दिया गया और उनके ठहरने का प्रबन्ध आश्रम के सामने गार्डेन ऑफ़ हार्टस मे अभ्यासियों के साथ कराया गया। मध्य रात्री तक बाढ़ का पानी सहज नदी (कुटीर क्षेत्र के अंदर) के पुल के ऊपर बहने लगा था और खतरनाक रुप से बढ़ रहा था। करीब १.३० बजे सिंह द्वार ढह गया और कुछ ही मिनटों मे कुटीर १ १/२ फीट तक जलाप्लावित हो गया। आश्रम के पुराने मेडीकल सेंटर की तरफ़ का भाग १२ फीट पानी में पूरी तरह से डूबा हुआ था।

बरसात २८ तारीख की सुबह को भी कम होने का नाम नही ले रही थी और निकटवर्ती तालाब और अडयार नदी का पानी परेशानी को और भी बढ़ा रहा था। दोपहर तक नौकाऐं (रौयापुरम क्षेत्र के मछुआरों के साथ) और डोंगी नाव (तट रक्षक) आश्रम मे आ गये थे। मछुआरों और तट रक्षकों ने करीब ५० फँसे हुए लोगों को उनके घरों से बचाया।

२९ तारीख तक बाढ़ का पानी ध्यान कक्ष के पास कम होने लगा था। गुरुदेव निरीक्षण के लिये आये। उन्होंने गाड़ी से चक्कर लगाया और विभिन्न जगहों को देखने के बाद 'गायत्री' चले गये। ३ तारीख को गुरुदेव आश्रम से तिरुप्पूर के लिए हवाई अड्डे रवाना हुए।

तब से, भारत के विभिन्न भागों से स्वयंसेवक बाढ़ के उपरान्त सफाई कार्य के लिये उमड़ रहें हैं। शयनागार खन्ड, रसोईघर, शौचालय और दूसरे स्थान स्वयंसेवकों द्वारा साफ़ कर दिये गये है। इस समय के दौरान, आश्रम सुविधायें बंद थीं।

गुरुदेव ने ३१ तारीख को आश्रम में उपस्थित अभ्यासियों के बीच रसोईघर और कैंटीन को दुबारा खोला। शाम को ध्यान कक्ष मे एक संगीत कार्यक्रम आयोजित किया गया। मध्यरात्री में गुरुदेव ने ध्यान कक्ष में आकस्मिक सत्संग कराया। उन्होंने १ तारीख को प्रात: ९.०० बजे सत्संग का संचालन किया और एक भाषण दिए। संघठित प्रयास के कारण आश्रम फ़िर से स्वाभाविक अवस्था मे आ गया है और अभ्यासियों के लिये निर्धारित निर्देशों के अनुसार उपलब्ध है।

मालिक की कुटीर

भोजन का परिसर

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
जनवरी २००९ केवल निजी परिचालन के लिए खंड २ अंक १

प्रगत स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम – जयपुर

आंचलिक आश्रम, जयपुर ने ३० नवम्बर २००८ को एक एक–दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया। करीब दस केन्द्रों से सहज मार्ग का अभ्यास एक वर्ष से अधिक समय से करने वाले ८५ अभ्यासियों ने भाग लिया। सत्र के विषय थे – सतत स्मरण, मिशन साहित्य के पठन का महत्व, आध्यात्मिक प्रगति के लिये सही दृष्टिकोण और व्यवहार की जरूरत, रुपांतरण, स्वयंसेवियों की भूमिका और दैनिक अभ्यास में साधारण त्रुटियों को कैसे रोका जाये। अजमेर केन्द्र के सहभागियों ने नये प्रार्थियों को सहज मार्ग से परिचित कराने के लिए एक लघु नाटिका का आयोजन किया।

वडोदरा में नये प्रवेशियों के लिये कार्यक्रम

रविवार, १९ अक्टूबर २००८ को वडोदरा आश्रम में नए अभ्यासियों के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इस आधे दिन के कार्यक्रम का उद्देश्य सहज मार्ग अभ्यास के मूलभूत तथ्यों पर प्रकाश डालना था। इस कार्यक्रम में कई रोचक सत्र आयोजित किये गये जो सहभागियों में भाईचारा बढ़ाने में काफ़ी सफ़ल सिद्ध हुए। चर्चासत्र, चित्रण, व्यवहारिक अभ्यास और प्रतिक्रिया सत्रों के कारण कार्यक्रम सहभागात्मक बना रहा।

शाहजहाँपुर में साधना कार्यक्रम

शाहजहाँपुर आश्रम में हिन्दी में प्रथम साधना प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन शाहजहाँपुर केन्द्र प्रभारी, भाई सर्वेश चन्द्र ने किया। अपने भाषण में उन्होंने शाहजहाँपुर आश्रम के महत्व पर बल दिया और सबको गुरुदेव और बाबूजी जो हमें बनाना चाहते हैं उसके अनुरूप विकसित होने की सलाह दी। अभ्यासियों से स्वयं के मूल्यांकन, स्वीकृति और स्वयं में बदलाव लाने के लिये अपने जीवन के पाँच सकारात्मक और नकारात्मक प्रश्नों को लिखने का आग्रह किया गया।

गठित छह दलों में से प्रत्येक ने विषय तैयार किये और हर एक दल में से एक सदस्य ने सारांश प्रस्तुत किया। प्रशिक्षकों ने संक्षेपण किया और प्रश्नों के उत्तर दिये।

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम – पैठाण

पैठाण मे ९ नवम्बर को एक अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस केन्द्र में आयोजित होने वाला यह पहला प्रशिक्षण कार्यक्रम था। पैठन, अहमदनगर और निकटवर्ती केन्द्रों से १४३ अभ्यासियों ने भाग लिया। सहज मार्ग से परिचय, ध्यान, सहज मार्ग के गुरुजन, सफ़ाई और उसका महत्व, जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। सभी वक्ताओं ने अपने विषय को समझाने में प्रस्तुतीकरण का माध्यम अपनाया और इससे सहभागियों को विषय समझने में काफ़ी मदद मिली। कार्यक्रम का संचालन मुम्बई केन्द्र के भाइ तुषार प्रधान ने किया। भाग लेने वालों की प्रतिक्रिया बहुत अच्छी रही और उन्हें यह कार्यक्रम काफ़ी उपयोगी महसूस हुआ।

अहमदाबाद मे युवा संगोष्ठी

गुरुदेव के हाल के चेन्नई वार्ता के उत्तरकथा के रूप में, जहाँ उन्होंने अभ्यासी भाईयों को चरित्र निर्माण पर बल देने को कहा था, 'व्यक्तिगत चरित्र आध्यात्मिक जीवन की नींव हैं', इस विषय को अहमदाबाद में १४ दिसम्बर कि युवा संगोष्ठी के लिये इस्तमाल करने का निर्णय लिया गया।

ऐसे व्यासपीठ प्रतिभागियों को आत्मनिरीक्षण, स्वयं का मूल्यान्कन और अपने जीवन में स्वयं पैदा की हुइ जटिलता को सुलझाने का काम करते हैं।

एक बड़ा फ़ायदा यह हुआ कि करीब एक दर्जन युवाओं ने, मिशन के कार्य में संलग्न होने की आवश्यक्ता को व्यक्त करने के बाद, नियमित रूप से स्वयंसेवी कार्य के लिये प्रतिबद्धता का प्रण लिया।

अब मुख्य मुद्दा होगा इन युवाओं का जोश और उत्साह २००९ मे बनाइये रखना।

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम खानापुर, बेलगाँव जिला

बेलगाँव से १५ अभ्यासियों का दल खानापुर के नये अभ्यासियों और बीदर से भाई काशमपुरकर के साथ सम्मिल्लित हो गया। स्थान एक विद्यालय था जिसके प्रध्यापक ने, जो एक अभ्यासी हैं, इस अवसर के लिये परिसर की पेशकश की थी।

यह कार्यक्रम सराहा गया और अभ्यासियों ने मिशन के मूल्यों को स्वीकार कर एक दुर्लभ परिपक्वता दिखायी और सहज मार्ग साधना की अच्छी समझ प्रदर्शित की। सत्संग के बाद कार्यक्रम गुरुदेव की पसन्द के गीतों के संग्रह में से भाई वस्त्रद के एक गीत के मधुर प्रतिपादन से शुरु हुआ। कार्यक्रम परम्परागत अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम की तर्ज पर आगे बढ़ा जिसमें मल्टीमीडिया सुविधाओं का उपयोग हुआ जो कार्यक्रम को एक व्यवस्थित रुपरेखा प्रदान करने के लिये उपलब्ध थीं। विभिन्न वक्ताओं ने सहज मार्ग के अभ्यास पर भाषण दिए। कार्यक्रम का समापन सन्ध्या सत्संग से हुआ। अभ्यासियों ने प्रसन्नता व्यक्त की और कुछों ने गुरुदेव से जल्द भेंट करने की इच्छा व्यक्त की।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
जनवरी २००९ केवल निजी परिचालन के लिए खंड २ अंक १

अध्यापको के लिये मूल्याधारित आध्यात्मिक शिक्षा कार्यक्रम (वी बी एस ई) अहमदनगर

७ नवंबर, २००८ को प्राथमिक स्कूल, अहमदनगर, महाराष्ट्रा मे, जहाँ हमेशा रविवार का सत्संग होता है, मराठी में एक 'वी बी एस ई' के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भाई विश्वास टिल्लू ने आज के समाज मे मूल्यों की आवश्यकता पर बल दिया। और भाई तुषार प्रधान ने भिन्न-भिन्न स्कूलों व 'एस एम आर टी आई' के द्वारा 'वी बी एस ई पर अपनाये गये तरीकों का विवरण दिया।

ऐसा महसूस किया गया कि छोटे शहरों मे नैतिक शिक्षा बडे शहरों की अपेक्षा ज्यादा अच्छी है। लेकिन यात्रा करने वाली टीम का यह भी अनुभव रहा कि छोटे शहरों मे भी टी. वी के अवतरण व संचार (मीडिया) के विभिन्न माध्यमों के कारण मानवीय मूल्यों को पकडकर रखने की आवश्यकता बहुत ज्यादा हो गई है।

चर्चामें इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया कि आजकल के बच्चों को- अभिभावकों, अध्यापकों व मित्रों के द्वारा प्रतिद्वंदिता व गला काटने वाली स्पर्धा की दुनिया में धकेला जा रहा है। यह आवश्यक है कि मानवीय मूल्यों की आवश्यकता को बनाये रखें और रोज़ाना आने वाले तनाव (दबाब) को संतुलित किया जाये। यदि मूल्यों को सिखाया जाये तो वह मुश्किल से सीखे जाते है - ऐसी कहावत है। अध्यापक बच्चों के व्यक्तित्व को उभारने में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं और उनपर एक जबरदस्त जिम्मेदारी है कि जो विश्वास, विद्यार्थियों का उनपरे है, उसे बनाये रखें।

कुछ प्रयोगों, क्रिया व कहानियों को इस तरीके से बताया गया कि उनमें मूल्यों का समन्वय करके उसका प्रदर्शन किया जा सके। 'एस एम आर टी आई' का पाठ्यक्रम, जो सही समय पर सही मूल्य पर बल देता है उसे दर्शाया गया। वार्ता के बाद प्रश्नोत्तर का कार्यक्रम हुआ।

प्रधानाध्यापक व ट्रस्टी ने 'एस एम आर टी आई' टीम को इस कार्यक्रम को आयोजित करने के लिये धन्यवाद दिया और इसकी पूष्टी स्कूल के एक अध्यापक के हृदयस्पर्शी आभार प्रकट करने वाले भाषन ने भी की।

आवश्यक सूचना

अभ्यासियों को मालिक की व्यक्तिगत व औपचारिक वार्ता का ऑडियो और वीडियो रिकार्डिंग करना मना है। अभ्यासियों को यह भी सलाह दी जाती है कि वे पूर्वअनुमति के बिना निजी वार्ता या मीटिंग के रिकार्ड वेब साइट पर जारी न करें।

रानीगंज के अध्यापकों व विद्यार्थियों के लिये 'वी बी एस ई' कार्यक्रम

१४ व १५ नवंबर को ज्ञानग्यान भारती स्कूल के आग्रह पर अध्यापकों व विद्यार्थियों के लिये एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। भाई अनिल, भाई पंकज रजक, भाई विजय चौधरी, भाई सुशांत और अंडल के भाई शेखर ने इस कार्यक्रम का आयोजन किया।

कक्षा ९ से १२ तक के करीब ४०० विद्यार्थियों ने इस विचार-विनिमय कार्यक्रम का आनन्द उठाया। प्रधानाध्यापक व समन्वयक पूरे समय उपस्थित थे। ३०० से भी ज्यादा विद्यार्थियों ने अपनी राय दी जिसमें स्कूल की बेहतरी के लिये ऐसे कार्यक्रमों की आवश्यकता पर बल दिया और यह प्रतिक्रिया प्रधानाध्यापक तक पहुंचाई गई। 'एस एम आर टी आई' के 'वी बी एस ई' के प्रति दृष्टिकोण को बहुत सारी पावर पाईंट स्लाइड्स व प्रयोगों के ज़रिये दर्शाया गया।

दूसरे दिन का कार्यक्रम अध्यापकों के लिये था जिसमें स्मृति के द्वारा रेखाकृत पावरपाइंट की प्रस्तुति को प्रयोगों के साथ दिखाया गया। सभी ने इसे लाभप्रद पाया और काफ़ी लोगों ने कहा कि वे बेहतर इंसान बनकर बेहतर अध्यापक बनने का प्रयास करेगें।

'वी बी एस ई' पर अभिभावको को सम्बोधन- रांची केन्द्र

१५ नवंबर,२००८ को रांची के एक हाउसिंग काम्प्लेक्स, लालपुर में ३० अभिभावकों के लिये मुल्याधारित शिक्षण प्रणाली 'वी बी एस ई' पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मिशन के 'वी बी एस ई' के पाठयक्रम के मुख्य अंश सबके साथ बाँटना और अभिभावको को अपने बच्चों मे सही मूल्यों का समावेश करने की उनकी भूमिका के बारे में संवेदनशील बनाना था।

बहन सुनंदा चौहान, बहन अनीता तिवारी, बहन अनुराधा चौहान, भाई अरून कुमार लाल, भाई पवन सहाय और भाई मनोज तिवारी ने अपने विचारों को श्रोताओं के सामने रखा। प्रयोगों के द्वारा मूल्यों की शिक्षा प्रदान करना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था। श्रोंताओं में तीन अध्यापक भी थे जो इस तरह के कार्यक्रम की उपलब्धिता का सन्देश लेकर अपने स्कूल गये।

इस कार्यक्रम के परिणामस्वरूप, रांची केन्द को, कुछ और स्कूल इस प्रकार के कार्यक्रम मे सहभागी होने की अपेक्षा है।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
जनवरी २००९ केवल निजी परिचालन के लिए खंड २ अंक १

देवरीया आश्रम का उदघाटन

उत्तरप्रदेश के देवरीया शहर मे एक आश्रम की स्थापना हुई जिसमे अभ्यासी भाईयों और बहनों ने आश्रम का काम पूरा करने मे शारीरिक व आर्थिक योगदान दिया।

जैसा कि तय था, भाई यू. एस. बाजपेयी, जोनल इन चार्ज– भाई नरसिंग वर्मा, गोरखपुर के प्रिसेप्टर भाई ए. के. सिंग, भाई डी.डी. पांडे, भाई रमाशंकर दीक्षित और भाई विनोद मोहन पांडे के साथ देवरीया आश्रम पहुँचे व आश्रम का उदघाटन किया।

देवरिया केन्द्र के आसपास के केन्द्र–सहोदर पट्टी, लक्ष्मीगंज, कप्तानगंज, पडरौना, कस्या (कुशीनगर), नडावर घाट, खुखुंद, जमीरा, सिसवा और गोरखपुर से लगभग २०० अभ्यासी सत्संग के लिये उपस्थित थे।

एक आध्यात्मिक समिति का आयोजन किया गया जिसमें शहर व गाँव के सन्माननीय नागरिक डाक्टर, इंजीनियर, संवाददाता, और उद्योगपति उपस्थित थे। सर्वप्रथम भाई रमाशंकर ने आश्रम की संरचना

के बारे मे बताया। भाई वर्मा ने श्री राम चन्द्र मिशन की स्थापना व मालिक और मिशन के उद्देश्य के बारे मे परिचय दिया। भाई बाजपेयी ने 'आध्यात्मिकता क्यों, यह क्यों जरूरी है' और 'मन पर नियंत्रण' इन विषयों के बारे मे बहुत सादगी और आकर्षक तरीके से भाषण दिया।

चन्द्रपुर, महाराष्ट्र केन्द्र में भूमी पंजीकरण

चन्द्रपुर केन्द्र के अभ्यासी भाई अमरसिंह राठोड और बहन सुस्मिता राठोड ने चार एकड भूमी चन्द्रपुर में आश्रम के लिये दी। २६ नवंबर को भूमी का पंजिकरण मिशन के संयुक्त सचिव भाई ए. पी. दुराई के द्वारा हुआ जहां जोनल प्रभारी डा. सुभाष वैद्य और केन्द्र प्रभारी भाई एल. के. गोयल भी मौजुद थे।

श्री राम चन्द्र मिशन की नई भूमी पर सत्संग का आयोजन हुआ। भाई ए. पी. दुरई ने अभ्यासियों से बात की और तोहफ़े की सराहना की। मालिक के प्रति कृतज्ञता उनकी बातों में दिखाई दे रही थी। अभ्यासियों के द्वारा दिखाये गये प्यार व उदारता की उन्होंने सराहना की। उन्होंने भाईचारे को बढाने और स्वयंसेवी कार्य में लिप्त होने का आग्रह किया।

२५ नवंबर को आई एन सी एम बी ए कॉलेज के विद्यार्थियों और जनता के लिये एक ओपन हाउस आयोजित किया गया। करीब १५० लोग इस कार्यक्रम में उपस्थित थे। भाई ए. पी. दुरई ने आध्यात्मिकता में योग्य और सजीव गुरू की आवश्यकता पर बल दिया। भाई वैद्य ने पद्धती को हिन्दी मे बताया।

उत्तराखंड मे एक रोचक प्रयोग

एक प्रिफ़ेक्ट और तीन अभ्यासियों की एक टीम– गंगोलीहाट, रानीखेत और अलमोडां की यात्रा पर निकली ताकि वे ओपन हाउस का आयोजन कर सकें, जिन अभ्यासियों को प्रिसेप्टर उप्लब्ध न होने के कारण लम्बे अरसे से सीटिंग नही मिली हो, उन्हे सिटिंग मिल सके तथा कम से कम एक नये केन्द्र की शुरूआत हो सके।

हमने १३ दिसंबर को अलमोडा से अपनी यात्रा की शुरुआत की और सबसे पहले गंगोलिहाट पर आकर रुके, यह एक नया केन्द्र है जिसमे करीब १५ अभ्यासी हैं। १४ दिसम्बर को मित्रों व परिवारों के सदस्यों के लिये एक ओपन हाउस आयोजित किया गया जिसमे करीब ४० लोगो ने भाग लिया। दूसरे दिन हमे इसी क्षेत्र की एक प्रसिद्ध गैर सरकारी संस्था 'जाग रे पहाड' ने उनके स्टाफ़ को भाषण देने के लिये आमन्त्रित किया। हमसे हर महीने उनके कर्मचारियों, निरीक्षकों और गाँववालों के लिये आध्यात्मिकता पर व्याख्यान देने के लिये आग्रह किया गया।

१५ दिसम्बर को हम पिथौरागढ तथा उसके आस पास के अभ्यासियों से मिले। हम चन्डक के पास एक अभ्यासी बहन से मिले जिसका हाल ही में ब्रैन ट्यूमर का आपरेशन हुआ था और वह अपने घर पर सिटिंग मिलने से अति प्रसन्न थी। हम थोडी देर के लिये 'थाल' मे रूकें और एक अभ्यासी बहन से मिले जिनका अभ्यास दो साल से छूट गया था। सिटिंग लेने के बाद उन्होनें फ़िर से ध्यान जारी रखने का दृढ निश्चय किया।

एक रात चौकोरी मे रुकने के बाद हमारा अगला पड़ाव विजयपुर था जहाँ हम विजयपुर इंटरमीडिएट स्कूल के स्टाफ़ से मिले। स्टाफ़ को 'वी बी एस ई' व सहज मार्ग अभ्यास के बारे मे सम्बोधित किया गया।

जैसे ही हम गरुर पहुँचे हम अपने कुछ जान पहचान के लोगो से मिले। उनमे से तीन, उसी रात को पहली सिटिंग लेने के लिये तैयार हो गये। अगले दिन हमने कुछ पुराने अभ्यासियों के बारे मे पता किया और कुछ और नये लोगों को शुरु करवाया। टीम नये प्रकाशन भी साथ मे लेकर चली थी जैसे आँडियो, वीडियो, फ़ोटो व मिशन की किताबें जिसे नये अभ्यासियों ने काफ़ी उत्साह के साथ लिया।

मालिक के आशीर्वाद से रविवार, २१ दिसंबर को गरुर के नये केन्द्र पर ७ नये स्थानीय अभ्यासी सत्संग में उपस्थित थे। इस केन्द्र को सम्भालने की जिम्मेंदारी अल्मोडा/रानीखेत के प्रिफ़ेक्ट की रहेगी।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
जनवरी २००९ केवल निजी परिचालन के लिए खंड २ अंक १

श्री राम चंद्र मिशन, सिक्कीम का नये क्षेत्रों मे प्रवेश

६ से ८ नवंबर को स्मृति के द्वारा गेंगटोक, सिक्किम में 'ध्यान के द्वारा तनाव प्रबंधन' विषय पर सरकारी अफ़सरों के लिये एक कार्यक्रम का आयोजन हुआ जिसे सिक्किम सरकार ने प्रायोजित किया। इस कार्यक्रम का संचालन भाई रवीन्द्र तेलंग ने किया जो आई ए एस, सेक्रेटरी, कृषि व बागवानी विभाग में हैं तथा मिशन के प्रशिक्षक भी हैं।

कृषि व बागवानी के मंत्री श्री सोमनाथ पौडयाल उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि थे व एम एल ए श्री भीम ढंगेल 'सम्माननीय अतिथि' थे। श्री ढंगेल ने सिक्किम के वर्तमान समाज पर चिंता ज़ाहिर की। उन्होंने राज्य में इतनी ज्यादा होने वाली आत्महत्याओं की संख्या पर खेद प्रकट किया। माननीय मंत्री ने 'तनाव प्रबंधन' के विषय पर कार्यक्रम आयोजित करने की सराहना की।

डा. परिप्लावि ने 'तनाव–चिकित्सा कोण' पर एक प्रस्तुति दी। भाई अरुण दवे के द्वारा आराम की तकनीक का प्रदर्शन किया गया। इसके बाद भाई ज्ञान सरीन ने 'संतुलित अस्तित्व' पर एक सत्र का आयोजन किया। डा. तेलंग ने 'सहज मार्ग में ध्यान' पर एक संक्षिप्त परिचय दिया और ३४ लोगों ने अभ्यास शुरू करने में अपनी तत्परता दिखाई।

दूसरे दिन बहन सीता द्वारा 'विश्व मूल्यों' पर, भाई ज्ञान सरीन द्वारा 'मन के सन्तुलन' पर और भाई अरुण दवे द्वारा 'मानवीय परिवर्तन' इस विषय पर एक रोचक सत्र का आयोजन हुआ। सत्र का अंत 'मालिक के हाथ का स्पर्श' नामक वीडियो से हुआ जिसने सब श्रोताओं के हृदय को छू लिया।

अंतिम दिन की शुरुआत भाई दवे की प्रस्तुति 'समय प्रबन्धन' से व बहन सीता की वार्ता 'सकरात्मक सोच' से हुई। सत्र पर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए सहभागियों ने बताया कि यह कार्यक्रम बहुत ही आरामदायक और ताजी हवा में श्वास लेने के समान था। इसका उन पर काफ़ी प्रभाव पडा है और उनमें यह काफ़ी बदलाव लायेगा। बहुत लोगों ने यह भी कहा कि उन्हे सिटिंग के बाद काफ़ी हल्कापन महसूस हुआ।

आन्तरिक बदलाव– स्वयं से 'उन' तक

तिप्तूर, १३ और १४ दिसंबर–२००८

मालिक ने हमेशा इस बात पर जोर दिया है कि सहज मार्ग स्व–परिवर्तन का एक मार्ग हैं जिसका ध्येय मानवीय पूर्णता या दिव्यता है। इस मकसद को प्राप्त करने के लिए हमारी साधना मे कई पहलू हैं ध्यान, सफ़ाई इत्यादि। इस उद्धेश्य को प्राप्त करने के लिये तिप्तूर के नये आश्रम में २ दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम रखा गया।

उसमे तिप्तूर, हासन, टुमकुर, शिमोगा और भद्रावति से करीब १३० अभ्यासियों ने भाग लिया। पहले दिन की शुरुआत सत्संग से हुई। इसके बाद भाई बी.जी. सुब्रमण्या और भाई श्रीनिवास ने 'धर्म और अध्यात्मिकता' और 'मालिक का महत्त्व एवं भूमिका' पर अपने विचार प्रकट किये। इस वक्तव्य ने हमे खुद से कई सवाल पूंछने पर मजबूर कर दिया कि वह कौनसा ध्येय है जिसके लिए हम सब यहाँ आए हैं? इन सब में मालिक की क्या भूमिका है? और सब से ज़रूरी, इन सब में हमारी भूमिका क्या है? क्या केवल अभ्यास करने की इच्छा ही काफ़ी है?

बहन मंजुला का 'चरित्र निर्माण' पर भाषण आंखें खोलने वाला था जिससे हमें यह पता चला कि हमें स्वयं क्या करना है। उसने हमें प्रोत्साहित किया और हमसे इस बात पर ध्यान केन्द्रित करवाया कि हम वो कैसे बनें जो हमें बनना है।

दूसरे दिन का विषय था – 'सहज मार्ग साधना पद्धती'। ध्यान, सफ़ाई और प्रार्थना के कई पहलुओं को विस्तार से समझाया गया और अभ्यासियों के कई सवालों का समाधान हुआ। कार्यक्रम के अन्तिम भाग मे, अभ्यासियों ने, 'मै और मेरे मालिक' इस विषय पर अपने अनुभवों का आदान प्रदान किया। बहुत से अनुभव हृदयस्पर्शी थे जिससे उन अभ्यासियों को प्रेरणा मिली, जो अब तक मालिक से नहीं मिले थे। शाम के सत्संग के बाद कार्यक्रम का अन्त हुआ जिसके बाद हम लोग अपने अपने शहरों के लिये रवाना हो गये। हमारे साथ हमारे दिल में यह दृढ संकल्प था कि इन दो दिनों में हमने जो सीखा है उसे हम हमारे जीवन मे उतारें।

महाराष्ट्र – गोवा प्रशिक्षक सेमीनार

पुणे के रिट्रीट सेन्टर, पानशेत में १४ से १६ नवंबर के दौरान महाराष्ट्र ज़ोन के नये प्रशिक्षकों के लिये, जो पिछले एक साल से प्रशिक्षक बने है, एक प्रशिक्षक सेमिनार का आयोजन हुआ।

४० भाई–बहनों ने इस सेमीनार मे भाग लिया। १५ नवंबर को ज़ोन प्रभारी डा. सुभाष वैद्य ने चर्चासत्र की शुरुआत की। सुबह का सत्र २ विषयों पर आधारित था – 'गुरुवंदना', जैसे हमारे तीनों मालिकों का काम और सहज मार्ग साधना पद्धती पर प्रस्तुति। दोपहर के सत्र को तीन विषयों में विभाजित किया गया–इच्छुकों को सहज मार्ग से परिचय, प्रशिक्षक व मिशन के काम में प्रशिक्षक की भूमिका, व अभ्यासी की सिटिंग।

१६ नवम्बर की सुबह की सभा में चर्चा के विषय थे – प्रशिक्षक–अभ्यासी आपसीसंवाद, बर्ताव मार्गदर्शन, व्यवस्थापकीय कार्य एवं मिशन के जमा खर्च का संचालन।

कई प्रशिक्षकों का मानना था कि इस कार्यक्रम द्वारा उन्हे अध्यात्मिक कार्य के साथ साथ मिशन के व्यवस्थापकीय क्षेत्र के कार्यों में प्रशिक्षकों की भूमिका की भी जानकारी मिली। नये प्रशीक्षकों के मन में जो शंकायें उठी थीं वे सब अपनेआप स्पष्ट हो गई जैसे उनके बारे में उन्होंने प्रश्न पूछे हों। मालिक का अपने कार्यकरताओं के प्रति स्नेह इससे प्रदर्शित होता है। आईए, हम उन्हें अपने कार्य व लगन से आनंदित करने का प्रयत्न करें।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
जनवरी २००९ केवल निजी परिचालन के लिए खंड २ अंक १

शैक्षिक परिसर पर धावा – जोधपुर केन्द्र, राजस्थान

जोधपुर केन्द्र ने सहज मार्ग पर भाषणों की एक श्रंखला का आयोजन किया और इनका आयोजन ६ से ९ नवंबर के दौरान कई संस्थानों में हुआ। जगहों का ब्योरा कुछ इस प्रकार है–

लाल बहादुर शास्त्री इंजीनियरिंग एण्ड रिसर्च सेन्टर और मारवार इन्जिनियरिंग कॉलेज एण्ड रिसर्च सेन्टर (विषय:– विज्ञान और अध्यात्मिक्ता , १५० छात्रों और अध्यापक वर्ग के लिए), दि टाउन हॉल (विषय: अध्यात्मिकता: एक उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने का तरीका , ६०० लोगों ने भाग लिया), जय नारायण व्यास युनिवर्सिटी एक्स्टेन्शन लेक्चर सेल (विषय: योग और सहज मार्ग, १५० अध्यपकगणों के लिये) और दि नेशनल ला युनिवर्सिटी (विषय: 'कानून और अध्यात्मिकता , १५० छात्रों और अध्यापकगणों के लिए)

डा. के. एस. बालसुब्रमण्यम, डायरेक्टर, स्मृति, चेन्नई, ने अपने भाषण में कहा कि अध्यात्मिकता न तो किसी नाम का आवाहन करती है, न ही ईश्वर को किन्ही गुणों से लैस करती है, और न ही यह माँग करती है कि हम मनुष्य के बनाये हुये कृतिम ईश्वर के सामने नत मस्तक हों। बल्कि अध्यात्मिकता मनुष्य का ध्यान उस असीमता पर केन्द्रित करती है जो हर चीज़ का सर्वप्रथम श्रोत है और जिसका न ही कोई रुप है और न ही कोई गुण। जब हम इस तरीके से ईश्वर के निकट जाते हैं तो हममें एक ऐसी समन्वय शक्ति उत्पन्न होती है जो अलग–अलग देशों और धर्मो के लोगों को एकजुट करके उनमें मनुष्य जीवन के मूल सिद्दांतों के प्रति समभाव उजागर करती है और दुर्भाग्यवश आज इसी चीज की कमी है। अध्यात्मिकता का अभ्यास अगर विनम्र भाव से ईश्वर तक पहुँचने के लिये किया जाये तो शायद यही वो प्रबल शक्ति है जो समभाव को ला सकती है। करीब १०–१२ नए भाई–बहन मिशन से जुड चुके हैं और यह सिलसिला जारी है।

आदान–प्रदान कार्यक्रम गुजरात

कई छोटे केन्द्रों में इस बात को पाया गया कि नए अभ्यासियों से बात करने के लिये नए लोगों की आवश्यकता है। आपसी वार्तालाप के बाद इस बात को महसूस किया गया कि एक आदान–प्रदान के कार्यक्रम का आयोजन किया जाये जिसमें केंद्र 'अ' के अभ्यासी केंद्र 'ब' मे जायें और वहाँ पर कम से कम आधा दिन एक साथ व्यतीत करें। और यह आमंत्रण देने वाले केंद्र के अभ्यासियों के लिये ज़ोश और उत्साह बढाने का एक प्रभावशाली तरीका साबित हुआ। बदले में केन्द्र 'ब' के अभ्यासी अगले कुछ महीने में केन्द्र 'अ' में जायेंगें।

अभ्यासियों के आपसी हेलमेल से, विचारों के आदान–प्रदान के अलावा कई विषयों पर सही समझ उभर कर आई। दोनों केन्द्र ने आपस में एक–दूसरे की अच्छी बातों को ग्रहण किया। जब अभ्यासी समूह में यात्रा करते है तो उससे भाईचारा भी बढता है।

वापी से लगभग २५ किलोमीटर दूर दमन नामक स्थान पर एक ऐसी ही सभा का आयोजन हुआ जिसमें सिलवासा और वापी के अभ्यासी एक दिन के कार्यक्रम के लिये एकत्रित हुए। यह सभी केन्द्र दक्षिण गुजरात में सूरत और मुम्बई के बीच स्थित है। यह देखा गया कि जिन केन्द्रों में इस तरह के आदान–प्रदान कार्यक्रम आयोजित हुए हैं, वहाँ पर नवीन उत्साह की एक लहर उस केन्द्र को प्रगति की तरफ़ अग्रसर करती है।

अध्ययन समूह– बलिया केन्द्र

इस केन्द्र के अभ्यासियों ने, हर रविवार सत्संग के उपरान्त, 'स्मृति' के द्वारा दिए हुए तरीकों और जानकारी अनुसार, अध्ययन समूह कार्यक्रम का आयोजन करने का निश्चय किया। कार्यक्रम की अवधि एक घंटा तय की गयी। 'स्मृति' के द्वारा दी गई सामग्री के एक सप्ताह के अध्ययन के बाद अभ्यासियों के ४ से ५ समूह बनाये गए। हर समूह मे एक व्यक्ति को मुख्य वक्ता बनाया गया। यह अध्ययन सामग्री इस तरह से आयोजित हैं कि इसमें मालिक द्वारा सिखाए गए अध्यात्मिक और भौतिक बातों का व्यवस्थित संग्रह है। इस कार्यक्रम की शुरुआत नवम्बर, २००८ में हुई। और जो युवा इस अध्ययन कार्यक्रम में संलग्न थे, उनमें भारी बदलाव देखा गया। ये नवयुवक, पूरे सप्ताह भर, शाम का समय किताबों का अध्ययन करते हुये रविवार को होने वाले कार्यक्रम की तैयारी में व्यतीत करते हैं।

शुरुआत में थोडी हिचकिचाहट थी परन्तु दो हफ़्तों के बाद लोगों को ऐसा लगने लगा कि उनके माध्यम से मालिक बात कर रहे हैं। उन्हे यह लगने लगा कि मालिक ने उनको अपने व्यर्थ जाने वाले समय का सदुपयोग करने का मौका दिया है। हर अभ्यासी यह सब बदलाव देखकर आश्चर्यचकित हैं जिससे उनका मालिक केप्रति प्रेम और विश्वास बढ रहा है।

एक हफ़्ते बाद यह देखा गया कि संचालकों के कहने पर भी कि जिसके पास समय न हो, वो जा सकते हैं के बाबज़ूद सभी अभ्यासी सत्संग के उपरान्त सहभागियों के विचार सुनने के लिये रुकने लगे।

हम मालिक से प्रार्थना करते है कि हमें समझ, सहनशक्ति, प्यार और क्षमा भावना का आशीर्वाद दें और हमें यह सही तौर से ग्रहण करने की शक्ति भी दें।

ओपन हाउस, एन एस आइ सी, नई दिल्ली

राष्ट्रिय लघुउद्योग महामंडळ (भारत सरकारका उपक्रम) ओखला इन्डसट्रियल एस्टेट, नई दिल्ली में एक खुले चर्चासत्र (ओपन हाउस) का आयोजन ४ दिसंबर को हुआ। इस कार्यक्रम में ४५ लोगों ने भाग लिया जिसमें कॉरपेशन के कुछ वरिष्ठ अधिकारी भी मौज़ूद थे।

इस कार्यक्रम का मुख्य विषय था–'एक संतुलित अस्तित्व के लिये ध्यान'। भाई ए. पी. पलटा ने संक्षेप मे विषय पर रोशनी डालते हुए वक्ता का परिचय दिया। भाई सरीन ने मुख्य विषय पर भाषण दिया। इसके बाद बहन शोभना ने मुख्य विषय पर परिचय देते हुए सहज मार्ग पद्धती के बारे में बताया। इसके बाद प्रश्नोत्तर का सत्र चला।

श्री राम चन्द्र मिशन®
एकोज़ इंडिया
जनवरी २००९ केवल निजी परिचालन के लिए खंड २ अंक १

योगाश्रम तिरुपती

इस बात को जानना आवश्यक है कि तिरुपती केन्द्र का आश्रम मिशन का पहला आश्रम है। यह २.५ एकड की भूमि पर बना हुआ है। १९६५ मे इसका शिलान्यास बाबुजी महाराज के करकमलों से हुआ और तब से यह केन्द्र सतत विकसित हो रहा है। आश्रम एक बहुत ही सुन्दर जगह पर स्थित है जहाँ से तिरुमला की पहाडियाँ व कपिलतीर्थम् के पानी के झरने, आश्रम के पिछवाडे से दिखते हैं।

इस केन्द्र के अभ्यासियों ने, इस केन्द्र के पहले प्रिसेप्टर श्री के. सी. वरदाचारी से सबसे अच्छी आध्यात्मिक शिक्षा पाई। जब से यह आश्रम बना है तब से पूज्य बाबुजी महाराज ने हर साल दक्षिण भारत के दौरे के साथ तिरुपती केन्द्र का दौरा किया था। तिरुपती केन्द्र की पच्चीसवी सालगिरह १९९० में मनाई गई जिसमें मालिक स्वयं उपस्थित हुए और अभ्यासियों को आशीर्वाद दिया।

इस केन्द्र की स्थापना १९६५ में एक छोटी सी इमारत से हुई जिसे डा. सी राजेश्वरी ने मिशन को दान में दिया था और उसके बाद यह केन्द्र लगातार बढता गया। नये ध्यान कक्ष का उदघाटन १९९४ में मालिक के द्वारा हुआ और इसमें करीब १००० अभ्यासी बैठ सकते हैं।

सहज मार्ग शोध संस्थान की स्थापना दिसंबर १९८४ में सर्वप्रथम तिरुपती में ही हुई थी। वर्तमान में यहाँ पर लगभग ९०० अभ्यासी हैं। यहाँ पर नियमित रुप से कई कार्यक्रमों का आयोजन होता रहता है।

आश्रम में एक पुस्तकालय है जो रोज़ अभ्यसियों के लिये खुला रहता है। अभ्यासी इसका प्रयोग मिशन के साहित्य को पढने के लिये करते हैं। बच्चों के लिये अन्दर और बाहर, दोनों ही तरह के खेल, खेलने की व्यवस्था है। हर रविवार को स्वागत कक्ष खुला रहता है जिससें नये जिज्ञासुओं को मिशन और पद्धती के बारे में उचित जानकारी दी जा सके।

इस केन्द्र के अभ्यासी बहुत ही ज़ोश से आश्रम के विभिन्न स्वयं सेवी कार्यों मे अपने आप को संलग्न रखते हैं।

ध्यान कक्ष

वाचनालय

आश्रम परिसर का रास्ता

संग्रह से

पहली इमारत

बच्चों के खेलनेका परिसर

To subscribe to this Newsletter please visit http://www.srcm.org/centers/as/in/newsletter/index.jsp
For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org

© 2008 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved.
"Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.
This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM.